भगत रविदास – सबद १
तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥
रागु सिरीरागु, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ९३

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥१॥
जउ पै हम न पाप करंता अहे अनंता ॥
पतित पावन नामु कैसे हुंता ॥१॥ रहाउ ॥
तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी ॥
प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी ॥२॥
सरीरु आराधै मो कउ बीचारु देहू ॥
रविदास सम दल समझावै कोऊ ॥३॥

सार: मैं इसलिए हूँ क्योंकि तुम हो और तुम इसलिए हो क्योंकि मैं हूँ और अस्तित्व इसलिए है क्योंकि हम हैं। हमारा सामूहिक अस्तित्व ही वास्तविकता को संभव बनाता है। सभी प्राणियों का सार आपस में गुंथा हुआ है, यह ऐसा गहरा संबंध बनाता है जो व्यक्तित्व की सीमाओं से परे है। अस्तित्व की इस अवस्था को समझने के लिए झूठे अहंकार का त्याग आवश्यक है, हमारे और ईश्वर के बीच अलग होने का भ्रम आवश्यक है। यह दृष्टिकोण बताता है कि सारी सृष्टि एकता के ताने-बाने की बुनावट है। प्रत्येक तत्व उसी एक व्यापक चेतना का प्रतिबिंब है। जब हम संसार को अपने ही स्वरूप का दर्पण मानते हैं तब हम दूसरों में अपने साँझा सार को पहचानना शुरू करते हैं जिससे हम एक-रूप में विलीन हो जाते हैं।

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥
तुम ही मैं हूँ और मैं ही तुम हो। हम दोनों में कोई भेद कहाँ है?

कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥१॥

रूप अलग-अलग हैं लेकिन आधार तो एक ही है, जैसे सोने का सिक्का बने या कंगन या समुद्र की लहरों का उतार-चढ़ाव। (१)

जउ पै हम न पाप करंता अहे अनंता ॥

अगर मैं कोई गलत काम न करूँ, हे अनंत, सर्वव्यापी चेतना।

पतित पावन नामु कैसे हुंता ॥१॥ रहाउ ॥

तो फिर मुझे, एक नीची जाति के व्यक्ति को, पवित्र कैसे माना जाएगा? यह कथन सामाजिक नियमों और धार्मिक मान्यताओं के बारे में एक गहरा सवाल उठाता है जो कर्मों और इरादों को धर्म के पैमाने पर नज़रअंदाज़ करते हैं। (१)(विराम)

तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी ॥

हे अनंत, सर्वव्यापी चेतना ही सर्वोच्च नायक है जो अंतरात्मा का साक्षी है।

प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी ॥२॥

साधक गुरु को जानता है और गुरु साधक को जानता है। यह सारी सृष्टि में निहित एकत्व को उजागर करता है। (२)

सरीरु आराधै मो कउ बीचारु देहू ॥

मुझे वह ज्ञान दो जिससे मैं शरीर को ध्यान के माध्यम के रूप में उपयोग कर सकूँ।

रविदास सम दल समझावै कोऊ ॥३॥

रविदास कहते हैं कि बहुत कम लोग यह समझते हैं कि सभी जीव समान हैं और एक समुदाय के हिस्से के रूप में आपस में जुड़े हुए हैं। (३)

तत्त्व: भक्त रविदास कहते हैं कि बहुत कम लोग इस सत्य को समझ पाते हैं कि समस्त सृष्टि एक समुदाय है जो परिस्थिति के तंत्र का हिस्सा है। यह समुद्र की लहरों के उतार-चढ़ाव के समान है जहाँ आधार तो एक ही है लेकिन उसका रूप अलग-अलग होता है। यह हमारे मन का अहंकार है जो द्वैत पैदा करता है। इससे कठोर सामाजिक नियम और धार्मिक सिद्धांत जन्म लेते हैं जो पवित्रता और एकता के माप के रूप में कार्यों और इरादों को नज़रअंदाज़ करते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com